Jan. 2022

SRMS Trust Bulletin

आयाम

SRMS रिद्धिमा के मंच पर नव वर्ष का उल्लास - PAGE 10

- राममूर्ति जी ने दी 7 जनवरी को गिरफ्तारी – PAGE 03
- SRMS ट्रस्ट के संस्थानों में गणतंत्र दिवस–PAGE 04
- रिद्धिमा में हुई तीसरी राष्ट्रीय चित्रकला प्रतियोगिता - PAGE 12
- SRMS में ब्रेन से सम्बन्धित ट्यूमर के ऑपरेशन- PAGE 13
- ट्रस्ट की पुरस्कृत कहानी 'नींव का पत्थर'- PAGE 14
- इंसानी बुद्धि बेहतर या मशीनी दिमाग - PAGE 16

सम्पूर्ण उच्चस्तरीय कैंसर चिकित्सा एक छत के नीचे

SRMS

आर.आर. कैंसर इंस्टीट्यूट एण्ड रिसर्च सेंटर

14 YEARS IN CANCER TREATMENT

रेडिएशन ऑन्कोलॉजी (रेडियोथैरेपी)

विश्वस्तरीय ट्रू-बीम टैक्नोलॉजी के साथ 2 लीनियर एक्सीलेरेटर उपलब्ध

IGRT, IMRT, VMAT, SBRT, SRT, SRS

ब्रेकीथैरेपी ▪ इन्ट्राकेविटरी ▪ इन्ट्राल्यूमिनर ▪ इंटरस्टेशियल ब्रेकीथैरेपी

सर्जिकल ऑन्कोलॉजी (कैंसर सर्जरी)

▪ लीवर, गॉल ब्लैडर, पैनक्रियाज, बाइलडक्ट, आंतों (कोलोरैक्टल), स्तन आदि की कैंसर सर्जरी
▪ नाक,कान,गले एवं मुंह की कैंसर सर्जरी ▪ सर्विक्स, यूट्रस, ओवरी आदि की कैंसर सर्जरी
▪ दिमाग एवं रीढ़ की हड्डी के कैंसर की सर्जरी ▪ ब्लैडर, प्रोस्टैट एवं किडनी की कैंसर सर्जरी
▪ फेफड़ों की कैंसर सर्जरी ▪ हड्डी के कैंसर की सर्जरी ▪ पीडियाट्रिक कैंसर सर्जरी ▪ स्किन कैंसर की सर्जरी

मेडिकल ऑन्कोलॉजी

▪ कीमोथैरेपी ▪ टारगेटेड थैरेपी ▪ इम्युनो थैरेपी ▪ हार्मोनल थैरेपी

कैंसर की समस्त एडवांस जांचें

▪ पैट / सीटी ▪ 3 टैस्ला एमआरआई (48 चैनल) ▪ 256 स्लाइस ड्यूल सोर्स सीटी स्कैन ▪ बोन स्कैन (DTPA)

इंटरवेंशनल रेडियोलॉजी ▪ अल्ट्रासाउण्ड / सीटी गाइडेड FNAC एवं बायोप्सी ▪ PTBD ▪ TRUS गोल्ड प्रोस्टेट बायोप्सी

सभी प्रकार की एण्डोस्कोपी ▪ एण्डोस्कोपी/ क्लोनोस्कोपी ▪ लैरेंगोस्कोपी ▪ ब्रान्कोस्कोपी ▪ सिस्टोस्कोपी
▪ कोलपोस्कोपी ▪ EBUS (एण्डोब्रांन्कियल अल्ट्रासाउण्ड)

श्री राम मूर्ति स्मारक इन्स्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज

13 किमी॰, बरेली-नैनीताल रोड, भोजीपुरा, बरेली ✆ 9412738657, 9458703122

कोविड को छोड़ आगे बढ़ें

वर्ष 2020 में दुनिया की अर्थव्यवस्था को झकझोरने के बाद कोविड महामारी ने 2021 में नए रूप में परेशान किया। वर्ष के आरंभिक तीन महीनों के बाद दूसरी लहर के रूप में यह देश में कहर बन कर टूटा। बरेली और आसपास के जिले भी इससे अछूते नहीं रहे। हर परिवार को इसने दर्द दिया। सभी ने किसी न किसी को खोया। कोविड प्रोटोकाल का पालन करने वाले और वैक्सीन की दोनों डोज लेने वालों पर इसने कुछ रहम किया। संक्रमित होने के बाद भी इन्हें ज्यादा परेशानी नहीं उठानी पड़ी। वर्ष के आखिरी महीनों में कोविड के नए रूप से कुछ राहत मिली लेकिन तीसरी लहर ने फिर लोगों को अपनी चपेट में लेना शुरू किया। हालांकि इससे ज्यादा कोई जनहानि नहीं हुई। लेकिन अभी यह महामारी गई नहीं है। इसका जिक्र नए वर्ष का स्वागत करते हुए एसआरएमएस ट्रस्ट के चेयरमैन श्री देवमूर्ति जी ने भी किया है। ऐसे में एक ही उपाय है जो उन्होंने भी बताया और वह है दो गज की दूरी और मास्क है जरूरी का पालन करना। साथ में पौष्टिक और संतुलित भोजन को खानपान में शामिल कर प्रतिरोधी क्षमता को मजबूत बनाए रखना। क्योंकि अब वक्त है कोविड को छोड़ कर आगे बढ़ने का...।

जय हिंद

अमृत कलश

''जो व्यक्ति अपनी योग्यता पर संदेह करता है वह न तो किसी अन्य का भला करता है और न ही स्वयं को ही लाभ पहुंचाता है।''

EDITORIAL TEAM

Amit Awasthi	-	Editor
Shivam Sharma	-	Correspondent
Rishabh Tiwari	-	Correspondent
Indu Dixit	-	Photographer
Dharmedra Kumar	-	Photographer
Yasmeen Khan	-	Designer
Vineet Sharma	-	(Co-Ordinator, IMS)
Dr. Ekta Rastogi	-	(Co-Ordinator, IBS)

Mail us: amit.awasthi@srms.ac.in, www.srms.ac.in

13 km., Ram Murti Puram, Nainital Road, Bhojipura Bareilly (U.P.) Mob.: 9458706090, 0581-2582000

सात जनवरी को दी थी गिरफ्तारी

हमारे प्रेरणा स्रोत

स्व. श्री राम मूर्ति जी
08.02.1910 - 02.10.1988

महामना मदन मोहन मालवीय और महात्मा गांधी के आह्वान पर स्वतंत्रता आंदोलनों में सक्रियता निभाने वाले स्वतंत्रता सेनानी राममूर्ति जी पढ़ाई पूरी करने के बाद बरेली वापस लौटे और यहां पर उन्होंने अंग्रेजों की गुलामी के खिलाफ लोगों को एकजुट करना आरंभ कर दिया। उनकी ओजस्वी वाणी और नेतृत्व क्षमता से लोगों में उनका प्रभाव बढ़ने लगा। उनके समर्थकों की संख्या तेजी से बढ़ रही थी। आम लोगों पर जारी अंग्रेजों के उत्पीड़न के विरोध में उनके आंदोलनों में लोगों की संख्या बढ़ने लगी। लोगों का समर्थन बढ़ने लगा। उनकी बढ़ती लोगप्रियता देख कर अंग्रेज सरकार ने भी उन पर अपना शिकंजा बढ़ा दिया। अब उन्हें एक बहाने का इंतजार था जिसके सहारे वह राममूर्ति जी को गिरफ्तार कर सकें। इसी बीच राममूर्ति जी ने लोगों से विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार का आह्वान किया। खुद विदेशी वस्त्रों की होली जलाई। बस अंग्रेजी सरकार इसी मौके की तलाश में थी। सिपाही वारंट लेकर उन्हें गिरफ्तार करने पहुंचे। लेकिन पिता साहू ठाकुर दास की इच्छा से राममूर्ति जी ने उनका आशीर्वाद लेकर हाथी पर बैठ कर गिरफ्तारी देने का फैसला किया। सारी तैयारियों के साथ इसके लिए दिन मुकर्रर किया गया। राममूर्ति जी हाथी पर बैठकर बेहरपुरा पहुंचे। जहां अंग्रेज सिपाहियों ने उन्हें सात जनवरी 1941 को सर्दी के मौसम में गिरफ्तार किया। एक वर्ष के सश्रम कारावास की सजा सुनाई। ऐसी महान शख्सियत को सादर श्रद्धांजलि...।

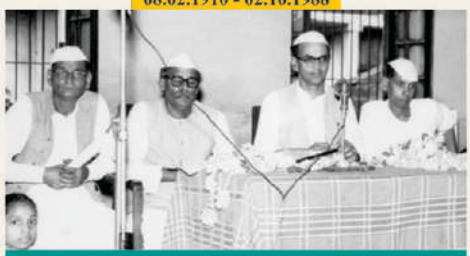

कांग्रेस की सभा को संबोधित करते कांग्रेस नेताओं के साथ स्वतंत्रता सेनानी श्रीराममूर्ति जी (फोटो एसआरएमएस आर्काइव)

Vision

- To be partner in building India a world leader in Medical Education & Health Care.
- To establish & develop world class self reliant institute for imparting Medical and other Health Science education at under-graduate, post-graduate & doctoral levels of the global competence.
- To serve & educate the public, establish guidelines & treatment protocols to be followed by treating hospitals.
- To provide quality & affordable health care facilities and services to all sections of society.

Mission

- To strive incessantly to achieve the goals of the Institution.
- To impart academic excellence in Medical Education.
- To practice medicine ethically in line with the global standard protocols.
- To evolve the Institution to the status of a Deemed University.
- Our Students - Our Assets.
- Our Staff - Our Means.

Values

Integrity **Excellence**
Fairness **Innovativeness**

एसआरएमएस ट्रस्ट के सभी संस्थानों में मनाया गया 73वां गणतंत्र दिवस समारोह

अधिकारों से ज्यादा कर्तव्यों को रखें याद: देव मूर्ति

एसआरएमएस रिद्धिमा, गुडलाइफ, सीईटी, सीईटीआर और आईएमएस में फहराया तिरंगा

बरेली: एसआरएमएस ट्रस्ट के बरेली, लखनऊ और उन्नाव स्थित संस्थानों में गणतंत्र दिवस धूमधाम से मनाया गया। ट्रस्ट चेयरमैन देव मूर्ति जी ने बरेली में एसआरएमएस रिद्धिमा, एसआरएमएस गुडलाइफ, एसआरएमएस सीईटीआर, एसआरएमएस मेडिकल कालेज, एसआरएमएस सीईटी में राष्ट्रीय ध्वज फहराया। देव मूर्ति जी, ट्रस्ट सेक्रेटरी आदित्य मूर्ति जी, ऋचा मूर्ति जी, मेडिकल कालेज के प्रिंसिपल डा. एसबी गुप्ता, मेडिकल सुपरिंटेंडेंट डा.आरपी सिंह, डीन पीजी डा.पीएल प्रसाद, डीन यूजी डा. नीलिमा मेहरोत्रा, पैरामेडिकल कालेज के प्रिंसिपल कृष्ण गोपाल, सीईटी के प्रिंसिपल डा. प्रभाकर गुप्ता, नर्सिंग कालेज की प्रिंसिपल डा. रिंटू चतुर्वेदी, ला कालेज के प्रिंसिपल मुकुट बिहारी लाल ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और स्वतंत्रता सेनानी राम मूर्ति जी को श्रद्धांजलि पुष्प अर्पित किए। सभी की उपस्थिति में देव मूर्ति जी ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया। उन्होंने सभी को गणतंत्र दिवस की बधाई दी और देश की आजादी के लिए संघर्ष करने वाले स्वतंत्रता सेनानियों को नमन किया।

सीईटीआर, बरेली

चेयरमैन देव मूर्ति जी ने कहा कि 26 जनवरी 1950 को हमारा संविधान लागू हुआ था और हमारा देश विश्व के सबसे बड़े गणतंत्र के रूप में सामने आया था। इस दिन पर हमें अधिकारों को तो याद रखना ही चाहिए लेकिन उससे ज्यादा और उससे पहले अपनी ड्यूटी भी याद रखनी चाहिए। वह ड्यूटी या कर्तव्य जो हमें नागरिक के रूप में समाज और देश के लिए निभाने आवश्यक हैं। वह कर्तव्य जो हमें छात्र के रूप में निभाने हैं और वह कर्तव्य जो हमें मतदाता के रूप में निभाने हैं। अलग अलग समय पर ऐसी बहुत सी ड्यूटी हैं जो हमें निभानी चाहिए। तभी देश को शक्तिशाली और समाज को सुशिक्षित और सुसंस्कृत बनाया जा सकता है। विद्यार्थियों को तो इन कर्तव्यों को अपनी आदत में शामिल करना चाहिए क्योंकि आज के विद्यार्थी ही देश का भविष्य हैं। आप जिस प्रोफेशन में आए हैं वह जाति, धर्म और संप्रदाय

देखे बिना मानव सेवा को प्रमुखता देता है। मानव सेवा ही आपका भी धर्म है। प्रतिज्ञा है। मानव सेवा के जरिये ही आपको देश और समाज को आगे ले जाना है। इस मौके पर मेडिकल कालेज के प्रिंसिपल डा. एसबी गुप्ता ने कालेज की उपलब्धियों का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि इंडिया टुडे पत्रिका के सर्वेक्षण 2021 में 554 सरकारी तथा प्राइवेट मेडिकल कालेजों में 38वां स्थान प्राप्त किया है। साथ ही एसआरएमएस उभरते हुए मेडिकल कालेजों में 10वें स्थान पर है। पिछले वर्ष हमारे कालेज में एमबीबीएस की सीटें सौ से बढ़ाकर 150 करने की संस्तुति सरकार ने की है। इसके साथ ही यहां ट्रांसफ्यूजन मेडिसिन में पीजी सीट भी मिली है। डर्मेटोलाजी में भी एमडी की तीन सीटों की जगह पर चार सीटें की गई हैं। प्रदेश सरकार ने मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य कार्यक्रम के अन्तर्गत एसआरएमएस मेडिकल कालेज को रीजनल रिसोर्स ट्रेनिंग सेंटर (आर.आर.टी.सी) के रूप में मान्यता दी है। इसमें कालेज द्वारा बरेली सहित पांच जिलों के चिकित्सकों को प्रसूता विज्ञान का प्रशिक्षण दिया जाएगा। इसका उद्देश्य मातृ एवं शिशु मृत्यु दर कर कम करना है। कोविड के कठिन दौर में एसआरएमएस के वारियर्स ने सराहनीय कार्य किया जिसके लिए उन्हें अवाड्र्स भी मिले। मेडिकल सुप्रिंटेंडेंट डा. आरपी सिंह ने मुंशी प्रेमचंद की दो बैलों हीरा और मोती की कहानी का उदाहरण देते हुए कहा कि कालेज के सभी वर्कर्स ने हीरा और मोती के समान पूरी लगन से अपना कार्य किया। उन्होंने कोरोना महामारी से खत्म होने वाले सभी लोगों और शहीद वीर जवानों को श्रद्धांजलि दी।

इससे पहले एसआरएमएस मेडिकल कालेज में एमबीबीएस छात्रा वैष्णवी त्रिपाठी ने सभी का स्वागत किया। सभी को गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएं दीं और स्वतंत्रता सेनानी, पूर्व मंत्री बाबू जी स्वर्गीय श्रीराममूर्ति और राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की तस्वीर पर माल्यार्पण और तिरंगा फहराने के लिए चेयरमैन देव मूर्ति जी और अन्य लोगों का आग्रह किया। एमबीबीएस की छात्राओं ने राष्ट्रगान प्रस्तुत किया। इसके बाद पैरामेडिकल और मेडिकल के विद्यार्थियों ने अलग अलग देशभक्ति गीत प्रस्तुत कर शहीद जवानों को भावपूर्ण श्रद्धांजलि दी। मौके पर वाइस प्रिंसिपल डा. एनके अरोड़ा, डीएसडब्ल्यू डा.क्रांति कुमार, चीफ मेटरन डा. मलियम्मा, सभी विभागाध्यक्ष, डाक्टर, रेजिडेंट्स, पैरामेडिकल स्टाफ, नर्सिंग स्टाफ, कर्मचारी और विद्यार्थी मौजूद रहे। एसआरएमएस गुडलाइफ में डायरेक्टर ऋचा मूर्ति और स्टाफ मौजूद रहा। सीईटी में डा.प्रभाकर गुप्ता, डा.अनुज कुमार मौजूद रहे। एसआरएमएस नर्सिंग कालेज की प्रिंसिपल प्रोफेसर रिंटू चतुर्वेदी, ला कालेज के प्रिंसिपल मुकुट बिहारी लाल, सीईटीआर के डीन एकेडेमिक अंकुर कुमार और सभी स्टाफ मौजूद रहा।

सीईटी, बरेली

गुडलाइफ, बरेली

आईबीएस, लखनऊ

सीईटी, लखनऊ

नमन...

CELEBRATION ON

26 JANUARY

रिद्धिमा, बरेली

आईएमएस, बरेली

नए संकल्पों के साथ हुआ एसआरएमएस के संस्थानों में नववर्ष का स्वागत

कोरोना के खौफ से निकल कर आगे बढ़ें

अपने संदेश में एसआरएमएस ट्रस्ट के चेयरमैन देवमूर्ति जी ने किया आह्वान

- अधिक से अधिक कैंसर मरीजों के उपचार का संकल्प
- रिसर्च वर्क पर ज्यादा से ज्यादा काम करने की अपील
- कैंसर के अच्छे व सस्ते इलाज की आज ज्यादा जरूरत

बरेली: एसआरएमएस के संस्थानों में पहली जनवरी को धूमधाम से नववर्ष का स्वागत किया गया। एसआरएमएस मेडिकल कालेज में ट्रस्ट चेयरमैन देवमूर्ति जी ने सभी लोगों को नववर्ष की शुभकामनाओं के साथ पिछले वर्ष की उपलब्धियों का जिक्र किया। इस मौके पर उन्होंने आईएमएस में उत्कृष्ट कार्य करने वाले चार डाक्टरों को भी प्रमोशन लैटर प्रदान किए। अपने संबोधन में देवमूर्ति जी ने पिछले वर्ष आयी कोविड की दूसरी लहर का जिक्र किया। कहा कि महामारी का वह समय आज भी झकझोर देता है। उन दिनों आने वाला हर फोन, हर सूचना किसी न किसी बिछड़ने की खबर लाती थी। अपना कौन कब पिछड़ जाएगा, इसका भय हर समय सताता रहता था। यह डर आज समाप्त हो गया है। हम सब लोग आज नए साल का स्वागत कर रहे हैं, यह सबसे बड़ा अचीवमेंट है। ऊपरवाले की सबसे बड़ी कृपा है। उन्होंने रिसर्च वर्क में पिछड़ने पर दुख जताया। उन्होंने कहा कि अगर अच्छा इंस्टीट्यूट बनना है तो हमें रिसर्च वर्क आगे बढ़ाने के साथ ही पेटेंट हासिल करने पड़ेंगे। इसके लिए सभी फैकेल्टी को आगे आना पड़ेगा। देवमूर्ति जी ने आरआर कैंसर इंस्टीट्यूट के रूप में खोले गए कैंसर विभाग का भी जिक्र किया। उन्होंने कैंसर मरीजों को अच्छा और सस्ता इलाज मुहैया कराने का आह्वान किया। कहा कि इस वर्ष हमारा लक्ष्य है कि हमारे यहां से कैंसर के सभी मरीजों का इलाज हो। कोई भी मरीज बिना उपचार के वापस न जाए। हम बरेली और आसपास के इलाकों के मरीजों के साथ ही प्रदेश और दूसरे प्रदेशों के कैंसर मरीजों का भी उपचार यहां पर सुगम बनाएं। मरीज यहां उपचार करवा कर अपना जीवन सामान्य रूप से जी पाएं। हम मेडिकल कालेज के जरिये इस वर्ष अधिक से अधिक मरीजों का इलाज कर उनको स्वस्थ कर पाएं। हम सभी के लिए इस वर्ष यही संकल्प है। उन्होंने सभी हेल्थ वर्कर और स्टाफ से कोविड की बूस्टर डोज लेने का भी अनुरोध किया। कहा कि मरीजों के इलाज के लिए बेहद जरूरी है कि हम अपने स्वास्थ्य की भी चिंता करें। मेडिकल कालेज के डायरेक्टर एडमिनिस्ट्रेशन आदित्य मूर्ति जी ने भी रिसर्च वर्क और पेटेंट पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि इस वर्ष 2022 में हम मेडिकल कालेज की स्थापना के 20 वर्ष पूरे कर रहे हैं। इतने वर्ष में हमने मानव सेवा को अपना प्रथम कर्तव्य माना। इसी की बदौलत आसपास के क्षेत्रों में हमारी पहचान बनी है। नेपाल और उत्तराखंड सहित ढाई सौ किमी के क्षेत्र के मरीज अपने इलाज के लिए यहां आते हैं। साथ ही गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए पूरे देश से विद्यार्थी आ रहे हैं। जैसे जैसे हमारी ख्याति बढ़ रही है वैसे वैसे हमारी जिम्मेदारी भी बढ़ती जा रही है। इसलिए हमें अपनी प्रैक्टिस में भी बदलाव की जरूरत है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और उपचार देने में हमारा किसी से कोई कंपटीशन नहीं है लेकिन खुद को आगे रखने के लिए जरूरी है कि हम नयी टेक्नालाजी को सीखते रहें और उसके अनुसार जरूरी बदलाव करते रहें। हमें

एजूकेशन और पेशेंट केयर में हमें गुणवत्तापूर्ण मानकों को अपनाने के साथ उन्हें अपनी प्रैक्टिस में लाना होगा। ऐसा होने पर ही अगले वर्षों में हमारी उपलब्धियों की संख्या बढ़ेगी। आदित्य जी ने पिछले एक वर्ष में कोरोना मरीजों के उपचार में शामिल सभी डाक्टर और स्टाफ को विशेष रूप से बधाई दी। उन्होंने मरीजों को अधिक से अधिक फायदा पहुंचाने के लिए इलाज के सस्ते पैकेज बनाने पर जोर दिया।

इससे पहले मेडिकल कालेज के प्रिंसिपल डा.एसबी गुप्ता ने सभी का स्वागत किया और पिछले वर्ष मेडिकल कालेज को हासिल उपलब्धियों का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि यहां दी जा रही क्वालिटी एजूकेशन और विश्वस्तरीय इलाज को इंडिया टुडे ने भी माना है। इसी की बदौलत पिछले वर्ष के सर्वेक्षण में हमारे मेडिकल कालेज को सरकारी और निजी मेडिकल कालेज सहित देश के सभी 554 मेडिकल कालेज में 38वां स्थान प्रदान किया। देश में तेजी से उभरते मेडिकल कालेजों की श्रेणी में हमें 10वां स्थान दिया गया। यह हमारे लिए गर्व की बात है। पिछले वर्ष केंद्र और राज्य सरकार ने हमारे कालेज को कोक्लियर इंप्लांट सर्जरी के अपने पैनल में शामिल किया। डा.रोहित शर्मा और उनकी टीम ने इसके तहत छह बच्चों के आपरेशन भी किए। डा.पियूष अग्रवाल और उनकी टीम ने रेडियोथेरेपी के लिए नया इनोवेशन कर कैंसर मरीज के इलाज के लिए कम कीमत का उपकरण बनाया। इसके निर्माण में सिर्फ 22 हजार रुपये खर्च हुए। बाजार में इसकी कीमत डेढ़ लाख से ज्यादा है। डा.गुप्ता ने आयुष्मान भारत योजना के तहत सबसे ज्यादा मरीजों का इलाज करने पर सरकार और प्रशासन द्वारा प्रशंसापत्र दिए जाने का भी जिक्र किया। उन्होंने कोविड मरीजों के उपचार के लिए डा. ललित सिंह और चेयरमैन देवमूर्ति जी को कोरोना वारियर सम्मान हासिल करने की भी जानकारी दी। साथ ही बताया कि नवजात बच्चे और नव प्रसूता के इलाज में बरेली सहित आसपास के पांच जिलों में कार्यरत सरकारी चिकित्सा अधिकारियों को प्रशिक्षण देने के लिए भी प्रदेश सरकार ने हमारे संस्थान को रीजनल रिसोर्स ट्रेनिंग सेंटर के रूप में चुना है। हमारे यहां एमबीबीएस की सीटें भी सौ से बढ़ा कर 150 करने की स्वीकृति भी सरकार ने पिछले वर्ष प्रदान की है। इसके साथ ही ट्रांसफ्यूजन मेडिसिन औरर डर्मेटोलाजी विभाग में भी पीजी की एक-एक सीट नई प्रदान की गई। नए वर्ष में हम सब और अधिक मेहनत करने के साथ अधिक से अधिक मरीजों का इलाज कर संस्थान को शिखर पर ले जाने का प्रयास करेंगे। यही हम सबका संकल्प भी है। इस मौके पर इंजीनियर सुभाष मेहरा, मेडिकल सुपरिंटेंडेंट डा.आरपी सिंह, वाइस प्रिंसिपल डा.एनके अरोडा, डीन पीजी डा.पीएल प्रसाद, डीन यूजी डा.नीलिमा मेहरोत्रा, प्रिंसिपल आईपीएस डा.कृष्ण गोपाल, डीन सीईटी डा.प्रभाकर गुप्ता, डा. अनुज कुमार, डा.रितु सिंह, प्रिंसिपल नर्सिंग कालेज डा. रिंटू चतुर्वेदी, प्रिंसिपल ला कालेज मुकुट बिहारी दुबे, अनुराधा यादव सभी विभागाध्यक्ष और स्टाफ मौजूद रहा।

PROMOTION

Dr. Rajeev Tandon (Professor)
Respiratory Medicine

Dr. Punit Kumar (Asso. Professor)
Genral Surgery

Dr.Priyanka Kumar (Asso. Professor)
Community Medicine

Dr. Manish Malhotra (Asso. Professor)
Bio Chemistry

रिद्धिमा के मंच पर नववर्ष का उल्लास

बरेली: एसआरएमएस रिद्धिमा के मंच पर जनवरी माह का आगाज नव वर्ष के स्वागत के साथ हुआ। ट्रस्ट चेयरमैन देवमूर्ति जी ने वर्ष 2022 पर उपस्थित लोगों को नव वर्ष की बधाई और शुभकामनाएं दीं। पिछले वर्ष की उपलब्धियों का जिक्र किया. साथ ही कोरोना के संभावित खतरों से निपटने के लिए भी सभी को तैयार रहने और सरकार की एडवाइजरी के अनुसार सभी को बूस्टर डोज लगवाने की अपील की। इसके बाद रिद्धिमा के गुरुओं ने नववर्ष का स्वागत सुरमई संध्या के रूप में किया। अगले दिन दो जनवरी को रिद्धिमा का मंच एक बार फिर कैकेई के लिए सजाया गया। दर्शकों के पुरजोर अनुरोध के चलते लेखक अश्वनी कुमार लिखित नाटक 'मैं पापिनी क्यों' का फिर मंचन हुआ और अपयश की भागी बनी कैकेई के त्याग और बलिदान को खूबसूरती से दर्शाया गया। छह जनवरी को रिद्धिमा में संगीतमय कार्यक्रम कृष्णायण का अयोजन हुआ। भगवान श्री कृष्ण की भक्ति में डूबे इस कार्यक्रम में रिद्धिमा गुरुओं ने एक से बढ़कर एक प्रस्तुतियां देकर उपस्थित लोगों को भगवान कृष्ण का साक्षात्कार कराया। 9 जनवरी को देहरादून के थियेटर ग्रुप 'एकलव्य' की ओर से प्रसिद्ध नाटक 'एक रुका हुआ फैसला' का मंचन हुआ। नाटक में पूर्वाग्रहों से बंधे लोगों को दिखाया गया। इसका निर्देशन अखिलेश नारायण ने किया। 16 जनवरी को रिद्धिमा के मंच पर राष्ट्रप्रेम की अलख जगाई गई। दिल्ली के फाइव एलिमेंट्स थिएटर ग्रुप ने लेखक बंकिम चंद्र चटर्जी के प्रसिद्ध ऐतिहासिक नाटक 'आनंदमठ' का खूबसूरती से मंचन किया। बंगाल में पड़े अकाल और उसके बाद हुए संन्यासी विद्रोह पर आधारित इस नाटक ने दर्शकों को राष्ट्रप्रेम से सिंचित किया। नाटक का निर्देशन राखी मानव ने किया। 23 जनवरी को रिद्धिमा के मंच पर 'देवी महात्मय' के प्रथम खंड का मंचन हुआ। इसमें देवी दुर्गा के स्वरूपों का साक्षात्कार हुआ। कथक और भरतनाट्यम की जुगलबंदी से हुए इस मंचन में देवी महालक्ष्मी और मां काली द्वारा मधु कैटभ और महिषासुर वध को दिखाया गया। इस मौके पर एसआरएमएस ट्रस्ट के चेयरमैन देव मूर्ति जी, आशा मूर्ति जी, आदित्य मूर्ति जी, ऋचा मूर्ति जी, ट्रस्ट एडवाइजर इंजीनियर सुभाष मेहरा, सुरेश सुंदरानी, गुरु मेहरोत्रा, बरेली कालेज के प्राचार्य डा. अनुराग मोहन भटनागर, डा.एसबी गुप्ता, डा.आरपी सिंह, डा. एनके अरोडा, डा.पीएल प्रसाद, डा.नीलिमा मेहरोत्रा, डा.कृष्ण गोपाल, डा.प्रभाकर गुप्ता, डा.अनुज कुमार, डा.रितु सिंह, डा. रिंटू चतुर्वेदी, मुकुट बिहारी दुबे, डा. रोहित शर्मा, आशीष कुमार और शहर के संभ्रांत लोग मौजूद रहे।

- दर्शकों के अनुरोध पर फिर हुआ 'मैं पापिनी क्यों' का मंचन
- संगीतमय कार्यक्रम कृष्णायण में प्रदर्शित की गईं कृष्ण लीलाएं
- एक रुका हुआ फैसला से प्रदर्शित हुई समाज में फैली बुराइयां
- बंकिम के नाटक 'आनंदमठ' ने जागृत की राष्ट्रवाद की भावना
- 'देवी महात्मय' प्रथम खंड में मधु कैटभ और महिषासुर का वध

सुरमयी शाम से नव वर्ष का स्वागत

एसआरएमएस रिद्धिमा में नववर्ष के स्वागत में सुरों की महफिल सजी। सर्वप्रथम गुरु देवज्योति और उनके शिष्यों ने गणेश वंदना प्रस्तुत की। कागज के दो पंख लेके गीत को गुरु अंबाली प्रहराज और उनके शिष्यों ने भरतनाट्यम पर प्रस्तुत किया। रियाश्री ने रघुवर तेरी राह निहारे गीत पर कथक से प्रस्तुत किया. देवीशा और उनकी सहयोगी ने शंकर महादेवन के ब्रीथलेस गीत और फिल्म ताल के गाने ताल से ताल मिला को कथक से परफार्म किया। गायन गुरु शिवांगी मिश्रा और इंदु परडल ने गीत बाबूजी धीरे चलना को अपने स्वर दिए. गायन गुरु स्नेह आशीष दुबे और शिवांगी मिश्रा ने गीत ये रातें, ये मौसम, ये नदी का किनारा को अपनी आवाज दी। नववर्ष की पहली संध्या के गवाह बने रिद्धिमा के मंच पर इस मौके पर एक से बढ़ कर एक गीतों की प्रस्तुति दी गई।

बंगाल में अकाल और संन्यासियों का विद्रोह

नाटक की शुरुआत पदचिह्न नाम के एक गांव के जमींदार महेंद्र और उनकी पत्नी कल्याणी से होती है जो अकाल के चलते अपने अबोध शिशु को लेकर शहर की ओर जाते हैं। भूखी पुत्री के लिए दूध की तलाश में भटकते महेंद्र अपने परिवार से बिछड़ जाते हैं और विद्रोही संन्यासियों के शिविर में शरण पाते हैं। उधर पुत्री के साथ जंगल में भटकती कल्याणी को संन्यासी सत्यानंद बचाते हैं। महेंद्रसिंह अपनी सम्पत्ति, तोपों को मठ के अधीन एक दुर्ग बनवाते हैं। संन्यासियों और शत्रुओं के बीच संघर्ष होता है। जिसमें संन्यासी विजयी होते हैं। संन्यासी जीवानंद महेंद्र सिंह से पत्नी और पुत्री का मिलन करवाता है। नाटक में राजा महेंद्र का किरदार नितिन बुरा, कल्याणी का मधु, शांति का किरदार राखी मेहता, सत्यानन्द का मानव मेहरा, जीवानन्द का राघव शर्मा ने खूबसूरती से निभाया।

कलंकित हो कैकई ने रचा राम का चरित्र

नाटक की शुरुआत रानी कैकई के महराज दशरथ से मांगे गए दो वचन राम को चौदह वर्षों का वनवास और उनके पुत्र भरत को अयोध्या का राजा बनाने से हुई। नाटक में भरत का माता कैकेई पर क्रोध और उनके द्वारा श्रवण कुमार के माता-पिता का श्राप, बानरराज बालि के द्वारा किया गया अपमान का जिक्र किया गया। नाटक में कैकई के रूप में डा. दीपशिखा जोशी, श्रीराम के किरदार में अंशुमन, दशरथ का किरदार में मोहसिन खान सहित सभी लोगों ने बेहदरीन अभिनय किया। नाटक को रिद्धिमा के संगीत गुरुओं ने संगीत से सजाया। इसमें वश्वयलन पर सूर्यकांत चौधरी, कीबोर्ड पर अगस्टीन फ्रेडरिक, सितार पर कुंवरपाल, बांसुरी पर पवन कुमार चौधरी, सारंगी पर उमेश मिश्रा, तबला शवशंभू कपूर और मंजीरा पर जनार्धन भारद्वाज ने साथ निभाया।

कृष्ण भक्ति के रस में डूबे श्रोता

संगीतमय कार्यक्रम कृष्णायण में पहली प्रस्तुति भजन 'उठत कृष्ण बैठत कृष्ण' से हुई, जिसे गुरु जनार्दन भारद्वाज ने अपने सुरों से सजाया। 'अच्चुतम केशवम' को रिद्धिमा विद्यार्थियों ने अपनी सुरीली आवाज में पेश किया।शिवांगी मिश्रा ने भजन 'जमुना किनारे मेरो गांव' और स्नेहशीष दुबे ने 'श्याम तो घनश्याम तो' को प्रस्तुत किया। 'माई री मोहर लागे' को डा. रीता शर्मा और 'नाम लिया हरि का जिसने' को इंदु परडल ने स्वर दिए। भजन 'नाम संकीर्तन' पर शिवांगी मिश्रा, स्नेहशीष दुबे, डा. रीता शर्मा और इंदु परडल ने स्वर दिए। कार्यक्रम में सितार पर कुंवरपाल, तबला पर शिवशंभू कपूर और दीपक सहाय, बांसुरी पर डा. पवनराज चौधरी, सारंगी पर अनीश मिश्रा और उमेश मिश्रा, वायलन पर सूर्यकांत चौधरी, कीबोर्ड पर आशीष और गिटार पर फ्रेडरिक ने साथ दिया।

पूर्वाग्रहों को गलत मानती है दुनिया

नाटक 'एक रुका हुआ फैसला' की शुरुआत झुग्गी में रहने वाले लड़के से होती है जिसपर अपने पिता के कत्ल का इल्जाम है। मामले की सुनवाई 12 लोग करते हैं। सभी लड़के को कातिल समझते हैं और उसे सजा देना चाहते हैं। जबकि एक आदमी लड़के को गुनाहगार मानने से इनकार करता है और सबूतों के मद्देनजर बहस करना चाहता है। उस एक आदमी को छोड़ कर सबके अपने अपने पूर्वाग्रह हैं। नाटक आगे बढ़ता है। बहस होती है। नए नए तथ्य और सुबूत सामने आते हैं। आखिरकार सभी यह मानने को तैयार हो जाते हैं कि लड़का बेकुसूर है। नाटक में मनीषा सेमवाल, मयंक शाह, अखिलेश नारायण, परमजीत सिंह, तुषार बिष्ट, आदेश नारायण, अनुज कुमार, बृजेश नारायण, आकाश गुप्ता और पंकज कुमार भट्ट के शानदार अभिनय को दर्शकों ने खूब सराहा।

रिद्धिमा में तृतीय राष्ट्रीय चित्रकला प्रतियोगिता 'फाइन लाइन' आयोजित

राष्ट्रीय चित्रकला प्रतियोगिता में बच्चों ने उकेरी कला कृतियां

विजयी प्रतियोगियों के साथ चेयरमैन देव मूर्ति जी

बरेली: एसआरएमएस रिद्धिमा में नौ जनवरी को तृतीय राष्ट्रीय चित्रकला प्रतियोगिता 'फाइन लाइन' का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में सीनियर वर्ग में श्रुति गोयल और जूनियर वर्ग में विधि को प्रथम पुरस्कार हासिल हुआ। 'स्टिल लाइफ' थीम पर चित्रकारों ने एक से बढ़कर एक चित्र बनाए। विजेताओं को एसआरएमएस ट्रस्ट के चेयरमैन देव मूर्ति जी ने पुरस्कार प्रदान किए और आशीर्वाद देते हुए उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

एसआरएमएस रिद्धिमा पिछले वर्ष से राष्ट्रीय चित्रकला प्रतियोगिता कराता आ रहा है। नौ जनवरी को तृतीय राष्ट्रीय चित्रकला प्रतियोगिता 'फाइन लाइन' का आयोजन किया गया, जिसमें स्कूल और कालेजों से आए बच्चों ने भाग लिया। जूनियर और सीनियर वर्ग में आयोजित इस प्रतियोगिता में दोनों वर्ग के विद्यार्थियों को 'स्टिल लाइफ' थीम दी गई, जिसमें सीनियर वर्ग से प्रथम स्थान श्रुति गोयल, द्वितीय स्थान समीक्षा सक्सेना और तृतीय स्थान हर्षिता पंत ने हासिल किया। जूनियर वर्ग में जीडी गोयनका पब्लिक स्कूल की विधि को प्रथम स्थान, जीआरएम की हिमांशी भसीन को द्वितीय स्थान और राधा माधव पब्लिक स्कूल की प्राची पटेल को तृतीय स्थान हासिल हुआ। जूनियर वर्ग में राधा माधव पब्लिक स्कूल, जीआरएम, कांति कपूर, सेक्रेड हार्ट्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल, केंद्रीय विद्यालय, हार्टमैन और हांडा पब्लिक स्कूल के बच्चों ने भाग लिया। वहीं सीनियर वर्ग में एसआरएमएस और अन्य कालेजों के विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। प्रतियोगिता में आशीष कुमार, आशीष अग्रवाल, अनुज गुप्ता, अश्वनी, कविता अरोड़ा और रायश्री चटर्जी ने जज की भूमिका निभाई। इस मौके पर सीईटी प्रिंसिपल डा. प्रभाकर गुप्ता भी मौजूद रहे।

देवी दुर्गा के स्वरूपों का साक्षात्कार

कार्यकम 'देवी महात्मय' प्रथम खंड की शुरुआत दैत्य भाई मधु और कैटभ की उत्पत्ति से हुई। जो अपनी भूख मिटाने के लिए ब्रह्मा जी को खाने दौड़ते हैं। भयभीत ब्रह्मा जी ने भगवान विष्णु को पुकारा। उनकी पुकार पर योगनिद्रा में सोये भगवान विष्णु की नींद टूटती है। विष्णु दोनों के मस्तक चक्र से काटकर उनका अंत करते हैं। कार्यक्रम में आगे देवी महालक्ष्मी द्वारा महिषासुर वध कथा का मंचन हुआ। देवी काली का किरदार रिया सक्सेना, देवी महालक्ष्मी का अदिति देवी, दुर्गा का क्षमा अग्रवाल, भगवान विष्णु का अंशुमान, ब्रह्मा का शिवम, भगवान शिव का जितेंद्र, अप्सराओं के किरदार में मिलाना, देविशा और सांभवी, दानव मधु और महिषासुर का किरदार अखिलेश शर्मा ने और कैटभ का विनायक श्रीवास्तव ने निभाया। परदे के पीछे वायस ओवर अंबाली प्रहराज, रियाश्री चटर्जी, देवज्योति, प्रतुल सक्सेना, आयुष्मान ने दिया।

मेनिंजिओमा से पिछले पांच साल से थीं दिक्कत लकवाग्रस्त होने लगे थे अंग

एसआरएमएस में ब्रेन से संबंधित ट्यूमर के सफल आपरेशन

कासगंज की 73 वर्षीय महिला का आपरेशन कर निकाला 10 सेमी का ट्यूमर

डा. प्रवीण त्रिपाठी, न्यूरो सर्जन, एसआरएमएस आईएमएस

बरेली: सिर के अलग.अलग हिस्सों में अचानक दर्द, लंबे समय तक दर्द, शरीर में बिना किसी वजह कंपन, किसी अंग का सुन्न होना जैसे लक्षणों को नजरअंदाज न करें। इसकी वजह ब्रेन और रीढ़ की हड्डी के चारों पाई जाने वाली झिल्ली में ट्यूमर का होना हो सकता है। इसे मेनिंजिओमा कहते हैं। इससे प्रभावित व्यक्ति का समय पर इलाज न होने पर अंगों के लकवा ग्रस्त होने के साथ जान का खतरा बढ़ जाता है। कासगंज की 73 वर्षीय शाहजहां पिछले कई सालों से इसी से परेशान थीं। उनके सिर में 10 सेमी के ट्यूमर की वजह से उनके शरीर का बायां हिस्सा लकवाग्रस्त हो चुका था। एसआरएमएस मेडिकल कालेज में न्यूरो सर्जन डा. प्रवीण त्रिपाठी ने मुश्किल आपरेशन को अंजाम देकर उनकी बीमारी को दूर किया। आपरेशन के 24 घंटे के भीतर ही शाहजहां ने चलना शुरू कर दिया।

शाहजहां ने बताया कि पिछले पांच सालों से उन्हें सिरदर्द की समस्या थी। वहीं पास के अस्पतालों में उनका इलाज होता रहा लेकिन कोई लाभ नहीं मिला। कुछ महीने पहले उनके शरीर के बाएं हिस्से ने काम करना बंद कर दिया। इससे वो दैनिक कार्य करने में भी असमर्थ हो गई। तब घर वाले उन्हें लेकर बरेली आए। यहां कई बड़े अस्पतालों में दिखाया। जांच में ट्यूमर मेनिंजिओमा का पता चला। ब्रेन में रक्त नलिका के पास 10 सेमी बड़े ट्यूमर के आपरेशन में जान का खतरा बता कर डाक्टरों ने आपरेशन से मना कर दिया। ऐसे में उन्हें बरेली स्थित एसआरएमएस मेडिकल कालेज लाया गया। जहां न्यूरो सर्जन डा. प्रवीण त्रिपाठी ने मुश्किल बताते हुए भी आपरेशन करने पर रजामंदी दी। आपरेशन में करीब पांच घंटे लगे। डा. प्रवीण ने कहा कि उम्मीद से ज्यादा आपरेशन सफल रहा। इसी वजह से शाहजहां ने 24 घंटे के भीतर ही चलना शुरू कर दिया। करीब पांच दिन अस्पताल में रहने के बाद शाहजहां घर चली गई। अब वे पूरी तरह स्वस्थ्य हैं और चल फिर पा रही हैं।

- आपरेशन के 24 घंटे के भीतर ही मरीज ने किया चलना शुरू
- इलाज समय से न मिलने पर बीमारी हो सकती है जानलेवा

मेनिंजिओमा क्या है?

डा. प्रवीण त्रिपाठी कहते हैं कि मेनिंजिओमा एक प्रकार का ट्यूमर है। यह ब्रेन और रीढ़ की हड्डी के चारों ओर बनी परत जिसे मेनिंजिस कहते हैं, में होता है। इससे ब्रेन की नसों पर दबाव पड़ता है। हालांकि यह ज्यादातर धीरे धीरे बढ़ता है और वर्षों तक इसके लक्षण पता नहीं चलते। लेकिन इससे रोगी विकलांग तक हो सकता है। सिर दर्द, दौरे पड़ना, धुंधला दिखना, हाथ पैरों में कमजोरी आना, शरीर सुन्न होना और बोलने में दिक्कत होना इसके आम लक्षण हैं। एमआरआई और सीटी स्कैन से इसकी पुष्टि होती है। इसका इलाज ट्यूमर की स्थिति और लक्षणों के आधार पर किया जाता है। इसमें आपरेशन या रेडिएशन का भी उपयोग होता है।

एसआरएमएस मेडिकल कॉलेज में कम दरों पर हो रहा सफल आपरेशन

डॉ. प्रवीण कहते हैं कि अगर समय से इस बीमारी का पता न लगे तो यह जानलेवा साबित हो सकती है। ऐसे में कोई भी तकलीफ ज्यादा दिन तक रहने पर एसआरएमएस आकर तत्काल जांच करानी चाहिए। ज्यादा समय तक नजरअंदाज करना जानलेवा साबित हो सकता है। एसआरएमएस में ब्रेन के हर तरह की सर्जरी वर्षों से की जा रही है। मेनिंजिओमा जैसे ट्यूमर हों या किसी भी प्रकार का ट्यूमरए सबका सफलतापूर्वक इलाज एसआरएमएस में विश्वस्तरीय उपकरणों की मदद से कुशल चिकित्सकों की देखरेख में किया जाता है। यहां ब्रेन सर्जरी होने से अब इसके मरीजों को बड़े शहरों में भटकना नहीं पड़ता और बड़े शहरों के मुकाबले यहां आपरेशन का खर्च भी काफी कम होता है।

श्री राममूर्ति स्मारक ट्रस्ट द्वारा आयोजित कहानी प्रतियोगिता 2005 में प्रथम स्थान प्राप्त कहानी

नींव का पत्थर

लेखक- उमा भटनागर, पता- सन्तनगर (बरेली)

शान्ति निकेतन आज अपने नाम के विपरीत असामान्य रूप से लोगों की आवाजाही से उपजे शोर से गुन्जायमान था। सेठ विश्वनाथ के आकस्मिक निधन के कारण सारे परिचित और रिश्तेदार अंतिम दर्शनों के लिए आ रहे थे। इसलिए उनके बनवाए अनाथालयों और स्कूलों के बच्चे और कई गरीब किसान एवं बुनकर भी मौजूद थे, जिनकी सेठ जी ने काफी सहायता की थी। सेठ जी के दोनों बेटे अमित और अंकित एक तरफ उदास बैठे थे, लोग बारी-बारी से उन्हें ढाँढस बँधा रहे थे। वहीं उनकी पत्नियाँ क्रमशः पल्लवी और स्मृति करूण विलाप कर रही थीं। जबकि उनके बच्चे श्रुति और वेदान्त कम उम्र होने के कारण कुछ भी समझने में असमर्थ थे। इन्हीं सब के बीच थी एक नारी-देह, जो चेतना के उस चरम बिन्दु पर पहुँच चुकी थी कि चैतन्या और जड़ता का अन्तर ही मिट गया था। रह गई थी तो केवल चेहरे पर प्रतिबिम्ब छोड़ती मूक वेदना.....। ये थीं सेठजी की धर्म पत्नी कृष्णा देवी। हमेशा गहनों और महँगी साड़ियों से सजी रहने वाली कृष्णा जी आज वैधव्य की निशानी सफेद साड़ी में आधी-अधूरी लग रही थीं। दुःख से बोझिल पल धीरे-धीरे बीते और शव की रवानगी का समय भी आ गया। अब तक शान्त बैठी और पति के चेहरे को अपलक निहारती कृष्णा जी यकायक सक्रिय हो उठीं। निष्प्राण ही सही लेकिन वे अपने पति की देह के भस्मीभूत होने की कल्पना भी नहीं कर सकती थीं। वे बिफर पड़ी और लोगों को शव उठाने से रोकने लगीं। परन्तु शीघ्र ही वे विफल होकर बैठ गईं और उनके हृदय में बसा असीम दुःख पिघल-पिघल कर बाहर आने लगा..... अश्रु-धारा के रूप में। अंततः वे बेहोश हो गईं। अगली सुबह होश आने पर उन्होंने खुद को परिवार के सदस्यों से घिरा पाया। उनके होश में आने से सब चिन्ता-मुक्त दिखे। बेटे-बहुएँ पूरे दिन उन्हें फल आदि खिलाने का असफल प्रयास करते रहे। माँ.....! उनके कानों में एक चिर-परिचित कोमल स्वर पड़ा। कृष्णा जी ने पलट कर देखा, आँखों में छलकती पीड़ा लिए प्रेरणा खड़ी थी। उधर प्रेरणा उन्हें विधवा के रूप में देखकर स्तब्ध थी। माँग में सिंदूर, माथे पर बिन्दिया, मंगलसूत्र सब कहाँ थे! सफेद रंग की उज्जवलता उसकी आँखों में चुभ रही थी। वह दौड़कर माँ के गले लग गई। माँ मुझे तो कल रात पता चला। पहली ट्रेन से चली आई। मगर पिता जी को आखिरी बार.....। प्रेरणा ने भरे गले से लड़खड़ाते हुए कहा। तुम्हारी परीक्षा के कारण..... मैंने ही कहा था। कृष्णा जी ने समझाया। परीक्षा तो बाद में भी दी जा सकती थी पर पिता जी तो अब कभी.....। प्रेरणा कहते कहते रो पड़ी। कृष्णा जी ने उसे अपनी बाहों में भर लिया और सिर पर हाथ फेरने लगीं। माँ, मैंने सुना आप बेहोश हो गई थीं, अब तबियत कैसी है? ठीक है। माँ आपने कल से कुछ नहीं खाया, ऐसे तो आपकी तबियत फिर बिगड़ जाएगी। कुछ खा लीजिए, मैं लेकर आती हूँ। कुछ ही देर में प्रेरणा आ गई और उन्हें खिलाकर ही मानी। अगली सुबह सेठ जी की अस्थियाँ लाई गईं। कृष्णा जी एकटक अस्थि-कलश को देख रही थीं। अमित ने बताया कि माँ आज वकील साहब पिता जी की वसीयत लायेंगे। माँ कल हमारे कहने पर आपने कुछ भी नहीं खाया और प्रेरणा के कहते ही खा लिया। हम सबको बहुत बुरा लगा। क्या वही आप की सब कुछ है? अंकित ने उलाहना दिया। कृष्णा जी को ऐसे समय यह बात नागवार गुजरी। वे चुपचाप अपने कमरे की ओर चली गईं।

कुछ देर बाद वकील साहब आ गए। परिवार के सभी सदस्य मौजूद थे। वे वसीयत पढ़ने लगे। सेठ जी ने आधी सम्पत्ति अपनी पत्नी और शेष एक तिहाई सम्पत्ति प्रेरणा के नाम की थी। प्रत्येक बेटे को पाँच करोड़ की राशि दी थी, जबकि बची हुई सम्पत्ति का धर्मार्थ ट्रस्ट बना दिया था, जिस की ट्रस्टी कृष्णा जी और प्रेरणा थीं। कुछ समय बाद वकील साहब चले गए। परन्तु इस वसीयत ने घर में विवादों के बवण्डर की नींव रख दी। माँ, ये कैसी वसीयत बनाई है पिताजी ने, इतनी बड़ी जायदाद में से सिर्फ पाँच करोड़! अमित दाँत पीसता हुआ बोला। हमसे ज्यादा पैसे तो पिताजी ने प्रेरणा को दिए हैं। हमारे साथ नाइंसाफी हुई है। अंकित ने भी भाई का समर्थन किया। माँ हम आपके सगे बेटे हैं, प्रेरणा को तो सिर्फ आपने पाला है और जहां तक जायदाद की बात है वो हम अदालत से लड़कर ले लेंगे। अमित ने बात काटते हुए कृष्णा जी को मानों धमकी दी। बेटे- बहुएँ जा चुके थे। इस दुःख के समय में जिनसे प्यार व सहारे की आशा थी, उन्होंने कृष्णा जी की भावनाओं को तार-तार कर, उन्हें अकेला छोड़ दिया था। साथ थी तो केवल प्रेरणा। दोनों पर जैसे वज्रपात हुआ था।

अदालत! ये दोनों अपने पिता के अन्तिम निर्णय का सम्मान न करके उसे अदालत में चुनौती देंगे! कृष्णा जी के स्वर में चिन्ता और दुख स्पष्ट था। ऐसा कुछ नहीं होगा माँ.....मैं अपना हिस्सा भी उन दोनों को दे दूँगी। प्रेरणा ने हल सुझाया। ऐसा करके तुम भी उनका अपमान करोगी। लेकिन माँ भैया ने ठीक ही तो कहा। आपके प्यार में भले ही मैं यह भूल जाऊँ, पर आखिर हूँ तो मैं अनाथ ही। दोबारा ऐसा कभी मत कहना। तुम्हारे पिताजी और मैंने हमेशा तुम तीनों को एक सा ही प्यार दिया। दो बेटों के बाद हम दोनों ही एक

बेटी चाहते थे। तुमने तो हमारे परिवार को पूरा किया है। तुम हमारी लाडली इकलौती बेटी हो। हमने जो कुछ भी तुम्हारे लिए किया, परोपकार समझकर नहीं किया। शादी के बाद के दिन हमने अभावों में काटे थे। इन्होंने सारी जिन्दगी कठोर परिश्रम किया, तेज बुखार में भी कभी घर पर न बैठते। कुछ पैसे जमा कर के अपना काम शुरू किया। धीरे-धीरे व्यापार बढ़ने लगा, घर की स्थिति सुधरती गई। इनके अच्छे व्यवहार व ईमानदारी के कारण बाजार में इनकी साख बढ़ गई जो अब भी कायम है। इतना पैसा कमाने के बाद भी वे धरती से जुड़े रहे, अभिमान के आकाश पर नहीं बैठे। पति की मृत्यु के बाद कृष्णा जी पहली बार इतना बोल रही थीं इससे स्पष्ट था कि उन्हें अपने बेटों की बातों से कितना आघात लगा था। अपने माता पिता को देव-तुल्य मानने वाले बेटे को भगवान ने क्यों ऐसे कपूत दिए जो अपने स्वर्गवासी पिता को सिर्फ पैसों के लिए अपमानित कर रहे हैं। उनको गए आज मात्र तीन दिन हुए हैं, फिर भी ये लोग ऐसी बातें करने से बाज नहीं आते। आज उनकी आत्मा कितनी दु:खी होगी। पता नहीं हमने कौन से पाप किए थे जो हमें ऐसी सन्ताने मिलीं। इससे अच्छा तो हम नि:संतान ही....अचानक कृष्णा जी की आँखों के आगे अंधेरा छा गया। दिल में पीड़ा होने लगी। बीच-बीच में प्रेरणा की आवाज कान में पड़ रही थी। अन्तत: वे अचेत हो गई। अस्पताल ले जाने पर डॉक्टरों ने बताया कि उन्हें हार्ट-अटैक हुआ है, हालत गंभीर है। तुरन्त उन्हें आईसीयू में ले जाया गया। तीन दिन बाद होश आने पर हालत में सुधार के बाद उन्हें प्राइवेट केबिन मे ले जाया गया। माँ हम सब तीन रातों से यहीं आपके होश में आने का इंतजार कर रहे थे। उस दिन के लिए हमें माफ कर दीजिए। पिताजी ने जो भी दिया है, वही बहुत है। अमित और अंकित ने हाथ जोड़कर कहा। सारे दिन दवाओं और इंजेक्शनों का सिलसिला चलता रहा। धीरे-धीरे दो-तीन दिन बीत गए। घर से प्रेरणा के अलावा सभी लोग मिलने आते थे। कृष्णा जी जब उसके बारे में पूँछती तो सब बात टाल जाते।

कुछ दिनों बाद वे घर वापस आ गई। लेकिन डॉक्टर ने उन्हें एक महीने तक बेड-रेस्ट बताया था। शाम को प्रेरणा-श्रुति और वेदान्त के साथ उनके पास आई। दादी आप कैसी हैं? अब आप कहीं मत जाना। पता है मम्मी-पापा बुआ को कितना डाँटते थे। आपसे मिलने भी नहीं देते थे। वेदान्त ने भोलेपन से कहा। मम्मी और चाची, पापा और चाचा से कह रही थीं कि बुढ़िया से लड़ने की क्या जरूरत थी। उससे प्यार का दिखावा करो खुश हो गई तो अपना हिस्सा हमें दे देगी। दादी ये बुढ़िया कौन है? श्रुति ने पूछा। अच्छा अब तुम लोग जाओ। प्रेरणा ने उन्हें घूरते हुए कहा। प्रेरणा ये मुझे अपने साथ क्यों नहीं ले गए? उनकी आँखों में आँसू थे। " ताकि आप उनके अधूरे काम.....उनके सपने पूरे कर सकें"। " मैं कर ही क्या सकती हूँ"। आपने इतने मुश्किल दिनों में संघर्ष किया है। आपमें बहुत हिम्मत है। पिताजी गरीबों के लिए जो अस्पताल बनवाना चाहते थे, उनका वो सपना अब आप पूरा कीजिए। यही उनको आपकी सच्ची श्रद्धांजलि होगी। समय का चक्र कुछ और सरका और अन्तत: डॉक्टर ने उन्हें पूरी तरह स्वस्थ घोषित कर दिया। उसी दिन वे प्रेरणा के साथ आफिस गई और मैनेजर से कंपनी की स्थिति जानी। घर में इस बात से खलबली मच गई। लौटते ही अमित ने पूछा माँ आप आफिस क्यों गई थीं? आप निश्चिन्त रहें हम सब सँभाल लेंगे। नहीं, आफिस का काम आज से मैं और प्रेरणा सँभालेंगे। उन्होंने दृढ़ता से कहा। क्यों माँ, क्या आपको हम पर विश्वास नहीं है? आखिर हम इस खानदान के वारिस है। अंकित बोला। वारिस हो इसीलिए अपने पिता के परिश्रम की कमाई जुए और रेस में उड़ाते है? मैनेजर साहब ने मुझे सब बताया। दोनों बेटे निरूत्तर खड़े थे। हमें माफ कर दीजिए माँ। अंकित ने कहा। किस-किस बात के लिए तुम लोग क्षमा माँगोगे और कब तक मैं माफ करूँगी? माँ-बाप अपने बच्चों की बड़ी से बड़ी गलतियाँ भुला देते हैं। आप भी हमें क्षमा कर दीजिए। ऐसा फिर नहीं होगा। अमित बोला। तुम दोनों ने अपने माता-पिता का अपमान किया, अपनी बहिन का तिरस्कार किया, सिर्फ पैसों के लिए। तुम्हारी पैसों की भूख अब भी कम नहीं हुई। इसलिए मेरा निर्णय अटल है। लेकिन माँ आप दोनों ये सब कैसे सँभालेंगी? अमित ने पूछा। हाँ माँ, ये सब औरतों के बस के बाहर की बात है। अंकित ने समझाया। नारी शक्ति का असीमित पुन्ज है, माँ दुर्गा का अंश है। हर कार्य करने में सक्षम हैं। इस समाज ने स्त्री को देवी का दर्जा दिया। उसे ममता, त्याग और बलिदान की प्रतिमूर्ति कहा। उससे यह अपेक्षा की जाती है कि वह किसी फरिश्ते की तरह अपना सब कुछ औरों को देकर बलिदान की मिसाल बने। लेकिन लोग ये भूल जाते हैं कि क्या वह स्वयं इंसान नहीं है, उसमें भावनाएँ नहीं हैं, उसे कुछ नहीं चाहिए?.... और फिर इतने पर भी उसे मिलता है दोयम दर्जे का जीवन, अपमान, तिरस्कार, असुरक्षता और कभी-कभी तुम जैसी संतानें। माना कि बेटे परिवार के वारिस हैं परन्तु वंश-वृक्ष की इन बलिष्ठ शाखाओं की जननी भी स्त्री ही है। हर परिवार को एक स्त्री ही बाँध कर रखती है। जिस प्रकार नींव का पत्थर दिखता तो नहीं लेकिन वह मिट्टी के अंदर दब कर मकान को मजबूत बनाता है उसी प्रकार स्त्री भी अपना अस्तित्व खोकर और मुश्किलों से जूझकर परिवार को मजबूती देती है। हर पीढ़ी की बुनियाद में जैसे एक माँ दबी हुई है। तुम जैसे बेटे उसे वहीं दन कर देना चाहते हैं। ये कह कर वे चल पड़ी। उनमें आज गजब का आत्म-विश्वास था। अगले दिन परिवार के सभी सदस्य अस्पताल के लिए निश्चित स्थान पर शिलान्यास के लिए पहुँचे। हवन के बाद कृष्णा जी ने पहला पत्थर नींव में रखा, प्रेरणा उनके साथ खड़ी थी। जबकि बेटे- बहुएं दूर शर्मसार खड़े थे।

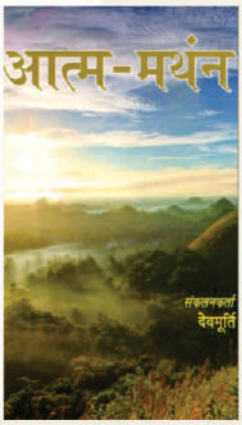

(समाप्त)

ARTIFICIAL INTELLIGANCE

इंसानी बुद्धि बेहतर या मशीनी दिमाग

दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान ब्रिटेन के ब्लेसली पार्क में और ब्रिटिश गणितज्ञ ऐलन टयूरिंग ने पहली बार तीव्र दिमाग की कल्पना की थी। जो आजकल हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनने जा रहा है। टयूरिंग ने तीव्रता को कभी भी इंसान का विकल्प नहीं बताया था। उन्होंने ये सोचा ही नहीं था कि आज हम आर्टिफिशीयल इंटेलीजेंस के सहारे मशीन को इतना विकसित कर देंगें कि मशीन भी कार चलाएगा, शतरंज खेलेगा, मेडिकल डायग्नोसीस करेगा, चेहरा पहचानेगा, मौसम की जानकारी देगा, किसी भी क्षेत्र में भविष्य की कल्पना करेगा अर्थात हर क्षेत्र में मनुष्य को टक्कर देगा, अब तो मशीन को देश की नागरिकता भी मिलनी शुरू हो गयी है जैसे सऊदी अरब ने सोफिया (रोबोट) को अपने देश की 2017 में नागरिकता प्रदान किया। चाईना अपने सिमाओं पर सैनिकों की जगह रोबोट लगा दिया है जो बर्फीली पहाडों कि ऊचाईयों पर गश्त लगा रहे हैं जहां इंसानो के लिए मुश्किल होता है। प्रश्न ये है कि क्या मशीन इंसान पर हावी होगा, आने वाले दिनों में इंसान मशीन के हाथों की कठपुतली बन जायेगा, तमाम फिल्में तो यही दिखाती हैं कि कैसे मशीन (रोबोट) इंसानो के लिए मुश्किल खडी कर देगा। फिर भी इंसान अपने बुद्धि को मशीनों में विस्थापित करना चाहता है और इस पर तमाम शोधकर्ता लगे हुए हैं। जो तीव्र मस्तिष्क विकसित करने का प्रयास कर रहे हैं। जो स्मृति, भावनाओं के साथ निर्णय लेने के मामले में मानव मस्तिष्क के कामकाज के समान हो। यहाँ तक कि मानव मस्तिष्क पर रिवर्स इंजीनियरिंग तकनीकों का उपयोग करके ब्लूब्रेन विकसित करने की भी कोशिश हो रही है। क्योंकि मानव मस्तिष्क की संरचना अभी भी वैज्ञानिकों के लिए एक पहेली है।

आजकल शोधकर्ता मानव मस्तिष्क और व्रिम मस्तिष्क के बीच एक संबध स्थापित करना चाहते हैं ताकि मशीन मानव मस्तिष्क की तरह काम कर सके और मानव की महत्वपूर्ण सामग्री जैसे ज्ञान, यादें, भावनाओं आदि संरक्षित किया जा सके जिससे किसी व्यक्ति के मृत्यु के बाद उसकी ज्ञान, उसकी भावनाए आदि को रखकर उसे अमर बनाया जा सके जैसे आत्मा अमर होती है इसी तरह हमारा ज्ञान, हमारी भावनाऐं अमर हो जायेंगी। लेकिन ये सब इतना आसान नहीं है थोडी सी भी भूल हमें नरक के द्वार तक ले जा सकता है।

हम जानते हैं कि बारिश में छाता लेना जरूरी है, पर बिना बारिश छाता लगाना हमारी इच्छा पर निर्भर करता है। ये हमारे विवेक पर निर्भर करता है। बहुत सारे निर्णय हम विवेक से लेते हैं। जीवन में कई ऐसी समस्याऐं आती हैं । जहां यदि हम थ्योरी को अप्लाई करे तो निर्णय कुछ और होगा और यदि विवेक अप्लाई करे तो कुछ और इसी तरह आर्टिफिशीयल इंटेलीजेंस में हम मशीन को कई तरह के एल्गोरिथम के द्वारा सोचने की क्षमता विकसित करते हैं, लेकिन उसमें विवके नहीं आता। जिससे कभी कभी मशीन भी बहुत ही खतरनाक निर्णय ले लेता है। कुछ दिन पहले ही जर्मनी से एक खबर आई थी कि वहां एक राबोट ने एक कर्मचारी को मार डाला।

हम सब जानते हैं कि ईश्वर और इंसान में फर्क होता है। ईश्वर ने ही हम सब को बनाया है। लेकिन कभी कभी वो भी सोचने लगता है कि हमने क्या बना दिया। वो खुद नहीं समझ पाता कि ''राम" और ''रावण" दो अलग अलग कैसे हो गये हमने तो एक ही तरह के आत्मा को दो अलग अलग शरीर में भेजा फिर भी इतनी भिन्नताएं क्यो ? इतिहास में ऐसे तमाम उदाहरण मिल जायेंगे जो ईश्वर के लिए ही मुसीबत बने, प्रकृति के लिए हानिकाराक रहे फिर भी ईश्वर मौन था। इसी तरह मनुष्य आने वाले किसी रावण जैसे मशीन को न्योता दे रहा है। जिस तरह किसी लेखक ने कहा है कि ''शिया चरित्र देवम ना जाने" उसी तरह इंसान भी मशीन का चरित्र नहीं जान पाऐंगें और भविष्य में यदि ऐसा हुआ तो भगवान शंकर की तरह इंसान को रोबोट के रूप में काली माँ के सामने लेटना (समर्पण) पडेगा। ये उस डरावने भविष्य की तरह लगता है जिसके बारे में प्रोफेसर स्टीफन हॉकिन्स ने हमें चेतावनी दी थी कि हम ऐसे भविष्य की ओर बढ़ रहे हैं जहां इंटेलीजेंट मशीनें मानव सभ्यता के अंत की इबादत लिखेगी।

अत: हे मानव रूक जा थम जा, जरा सोचकर आगे बढ़, मशीन में बुद्धि दे लेकिन वो बुद्धि समाज के हित के लिए हो न कि विनाश के लिए।

डा. संजय कुमार
विभागाध्यक्ष
एम.सी.ए विभाग
एसआरएमएस सी.ई.टी, बरेली

एसआरएमएस मेडिकल कालेज में 44 विद्यार्थियों को किया टैबलेट वितरण

बरेली: श्री राममूर्ति स्मारक मेडिकल कालेज सभागार में आठ जनवरी को एमबीबीएस 2016 बैच के 44 इंटर्नस को उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा बांटे जा रहे टैबलेट्स का वितरण किया गया। एसआरएमएस ट्रस्ट के चेयरमैन देव मूर्ति जी ने सभी को टैबलेट्स प्रदान किए। इस मौके पर उन्होंने और मेडिकल कालेज के डायरेक्टर एडमिनिस्ट्रेशन आदित्य मूर्ति जी ने सभी विद्यार्थियों को बधाई दी। कहा कि डिजीटल इंडिया में युवाओं को तकनीकी रूप से सशक्त बनाने के लिए सरकार का यह कदम सराहनीय है। टैबलेट लेने वाले विद्यार्थियों में मानस खण्डेलवाल, मिताली सिंह राणा, मो. इनायतुल्लाह, अंशु जायसवाल, अनुकृति अग्रवाल, अपूर्व जैन, अरूण कुमार, आमिर उस्मानी, चकित कुमार, दीपशिखा यादव, ईशा अग्रवाल, मो. सऊद, नंदनी सिंह, अवंतिका छिमवाल, प्रियंका, प्रतिमा सिंह, प्रतिभा शर्मा, शारंका सुल्तानिया, संदीप मधेसिया, रूचि बंसल, निकिता मिश्रा, निलाक्ष, नंदनी, रिया शर्मा, रितिका गोयल, ऋतिक गुप्ता, मोनिका सिंह सेंगर, मो. शोएब, अभिनव यादव, प्रगति जयसवाल, पार्थ अग्रवाल, परिधि कुमार, आक्षी सिंह, अक्षिता लाकरा, अनु अरोड़ा, कुमारी सुधा, गौरव रावत, फउद मोहसिन, आशी गुप्ता, दिविज पांडे, दिव्यांशु राज, अभिषेक कुमार, अदिति और आकांक्षा सिंह शामिल रहे। इस मौके पर प्रिंसिपल आईएमएस डा. एसबी गुप्ता, मेडिकल सुप्रीटेंडेंट डा. आरपी सिंह, डीन पीजी डा. पीएल प्रसाद, डीन यूजी डा. नीलिमा मेहरोत्रा समेत समस्त विभागों के विभागाध्यक्ष मौजूद रहे।

बढ़ रही हैं त्वचा संबंधी बीमारियां, कैंसर का खतरा ज्यादा

एसआरएमएस मेडिकल कालेज में 19 जनवरी को चुनौती बनती स्किन की बीमारियों के बारे में चर्चा की गई। डर्मेटोलाजी विभाग द्वारा आयोजित इस वेबनार का संचालन विभागाध्यक्ष और स्किन डिचीज के उपचार के लिए समर्पित संस्था त्वचा के निदेशक प्रोफेसर (डा.) प्रतीक गहलोत ने किया। उन्होंने कहा कि तमाम वजहों से आज स्किन संबंधी दिक्कतें बढ़ रही हैं। इनकी अनदेखी कैंसर तक को जन्म दे सकती है। ऐसे में किसी भी तरह के स्किन संबंधी बदलाव या दिक्कत होने पर तुरंत उपचार के लिए स्किन स्पेशलिस्ट से संपर्क करना जरूरी है। वेबनार में असिस्टेंट प्रोफेसर (डा.) अमर सिंह ने तेजी से बढ़ते त्वाचा संबंधी कैंसर कार्सिनोमा के बारे में जानकारी दी। उन्होंने इसके लक्षण और बचाव के साथ ही ट्रीटमेंट के तरीके भी बताए। सीनियर रेजिडेंट डा.आकृति चावला ने छह वर्ष के एक बच्चे की केस हिस्ट्री के साथ उसकी जांच और उपचार के तरीकों की जानकारी दी। डा.प्रवेश बलेचा ने भी 52 वर्षीय एक मरीज की केस हिस्ट्री के साथ अपना प्रेजेंटेशन दिया। उसके ऊपरी होंठ पर सेल्स की अनियंत्रित वृद्धि हो रही थी। जो उसके दांत, नाक को प्रभावित कर रही थी। ऐसे में मरीज को मल्टी ड्रग थेरेपी शुरू की गई। डा.आरती यादव ने सोरायसिस से पीड़ित एक छोटे बच्चे की केस हिस्ट्री के साथ अपनी बात रखी। डा.विश्वजोत ने जेनाइटल अल्सर से परेशान 52 वर्ष के एक मरीज की केस हिस्ट्री के साथ अपनी बात रखी। डा.वास्वी महाजन ने 14 वर्षीय एक लड़की की केस हिस्ट्री को साझा किया। जिसके चेहरे और गले की त्वचा पर काफी ज्यादा पिगमेंटेशन था। डा.राहुल देशमुख ने भी एक केस हिस्ट्री की मदद से अपनी बात रखी।

आईएमएस में मतदान की शपथ

बरेली: निर्वाचन आयोग के आह्वन पर 25 जनवरी को आयोजित राष्ट्रीय मतदाता दिवस के अवसर पर श्री राम मूर्ति स्मारक मेडिकल कालेज में डाक्टर्स, स्टाफ और विद्यार्थियों मताधिकार की शपथ ली। लोकतंत्र में पूर्ण आस्था रखने और लोकतांत्रित परंपराओं और मर्यादाओं को बनाए रखने, बिना किसी प्रलोभन में पड़े, जाति, धर्म और समुदाय से ऊपर उठ कर स्वतंत्र, निष्पक्ष मतदान करने और मतदान में सहयोग करने की यह शपथ मेडिकल कालेज के प्रिंसिपल डा. एस बी गुप्ता ने दिलायी। इसके साथ ही सभी ने शपथ पत्र भी भरा और धर्म, वर्ग, जाति और समुदाय से प्राभावित हुए बिना अपने मताधिकार का प्रयोग करने की घोषणा की। इस मौके पर मेडिकल सुप्रीटेंडेंट डा. आरपी सिंह, वाइस प्रिंसिपल डा.एन के अरोड़ा, डीन पीजी डा. पी एल प्रसाद, डा.पियूष अग्रवाल, डा.बिंदु गर्ग, डा.अतुल कुमार, डा.अनु अग्रवाल, डा. प्रतीक गहलोत, डा. मिलन जायसवाल, डा. धर्मेंद्र गुप्ता, मेडिकल स्टूडेंट और समस्त स्टाफ मौजूद रहा।

एसआरएमएस मेडिकल कॉलेज

आर.आर.टी..सी के रूप में पांच जिलों के चिकित्सकों को प्रशिक्षण

मातृ एवं शिशु मृत्यु दर कम करने के लिए इंडिया हेल्थ एक्शन ट्रस्ट और एसआरएमएस मेडिकल कालेज के बीच समझौता हुआ। 5 जनवरी 22 को हुए समझौते में एसआरएमएस को रीजनल रिसोर्स ट्रेनिंग सेंटर (आर.आर.टी.सी.) के रूप में मान्यता दी गई। इसके तहत यहां बरेली मंडल के चार जिलों सहित रामपुर के चिकित्सकों को भी प्रशिक्षण दिया जाएगा। इसके लिए स्त्री और प्रसूति रोग विभागाध्यक्ष डा.शशिबाला को नोडल अधिकारी बनाया गया है। प्रिंसिपल डा. एसबी गुप्ता के साथ ही डा.पीएल प्रसाद, डा. गीता काकह्न, डा.मृदु सिन्हा, डा. शांति शाह और डा.हुमा खान मास्टर ट्रेनर के रूप में सरकारी चिकित्सकों को प्रशिक्षण देंगे। इसके लिए मेडिकल कालेज में वर्कशाप होंगी और एक स्किल लैब भी बनाई जाएगी।

डा.नमिता अग्रवाल / डा.रुचिका गोयल, एसआरएमएस आईएमएस

प्रसूति और महिला रोग विभाग को उपलब्धियां, दो चिकित्सकों को फैलोशिप

डॉ. नमिता अग्रवाल

एसआरएमएस मेडिकल कालेज की दो गायनेकोलाजिस्ट डा.रुचिका गोयल और डा.नमिता अग्रवाल के लिए पिछला माह जनवरी उपलब्धि लेकर आया। यहां कार्यरत प्रोफेसर (डा.) नमिता अग्रवाल को इंडियन कालेज आफ आब्सटेस्ट्रिशियन एंड गायनेकोलाजिस्ट और इंडियन कालेज आफ मेटेर्नल एंड चाइल्ड हेल्थ की ओर से फैलोशिप प्रदान की गई। जबकि कंसल्टेंट डा.रुचिका गोयल को इंडियन कालेज आफ आब्सटेस्ट्रिशियन एंड गायनेकोलाजिस्ट की ओर से फैलोशिप प्रदान की गई। दोनों ने इस फैलोशिप को मेडिकल कालेज के प्रबंधन के नाम किया और कहा कि देश की बड़ी संस्थाओं की ओर से सम्मान मिलना बड़ी बात है जो मेडिकल कालेज के सही दिशा निर्देशन में ही संभव हो सकता है। कालेज के डायरेक्टर आदित्य मूर्ति ने दोनों को फैलोशिप मिलने पर खुशी जताई और इसे बड़ी उपलब्धि बताया।

डॉ. रूचिका अग्रवाल

डॉ. दीपक चरन, एसआरएमएस आईएमएस

इंडियन जर्नल आफ साइकोलाजिकल मेडिसिन में आर्टिकल

साइकेट्री डिपार्टमेंट में असिस्टेंट प्रोफेसर डा.दीपक चरन ने कोविड महामारी के दौरान मेडिटेशन प्रैक्टिस और उसके प्रभावों का अध्ययन किया। इंडियन जर्नल आफ साइकोलाजिकल मेडिसिन ने अपने जनवरी के अंक में इसे प्रकाशित किया है। यह मैगनीज पबमेड से मान्यता प्राप्त है। इसमें डा.दीपक ने बताया कि महामारी के दौरान आध्यात्म, मेडिटेशन और या अपनाया गया। ज्यादातर इससे फायदा हुआ। लेकिन कुछ केस में मनोवैज्ञानिक प्रतिकूल प्रभाव भी सामने आये।

Case Series

Meditation Practices and the Onset of Psychosis: A Case Series and Analysis of Possible Risk Factors

Deepak Charan[1], Pawan Sharma[2], Gaurav Kadhawaha[3], Gurveen Kaur[3] and Snehil Gupta[3]

Yoga and meditation are promising therapeutic interventions for physical and psychological con- the practice of meditation and harnessing the natural tendency of the body to attain pure consciousness; and (d) Guid- similarly, chapter-VI of Gita mentions about the moderation in food and sleep (Atma-Samyama Yoga),[9] flouting of

भारत और नेपाल में पांच मरीजों की केस हिस्ट्री से डा.चरन ने बताया कि इसकी वजह मानसिक रोग की फैमिली हिस्ट्री, इससे जुड़ कर बोलचाल बंद करना, असमय मेडिटेशन और सामान्य से इसका समय अचानक बढ़ा देना रहा है। ऐसे में एक्सपर्ट की निगरानी में ही मेडिटेशन करना उचित है।

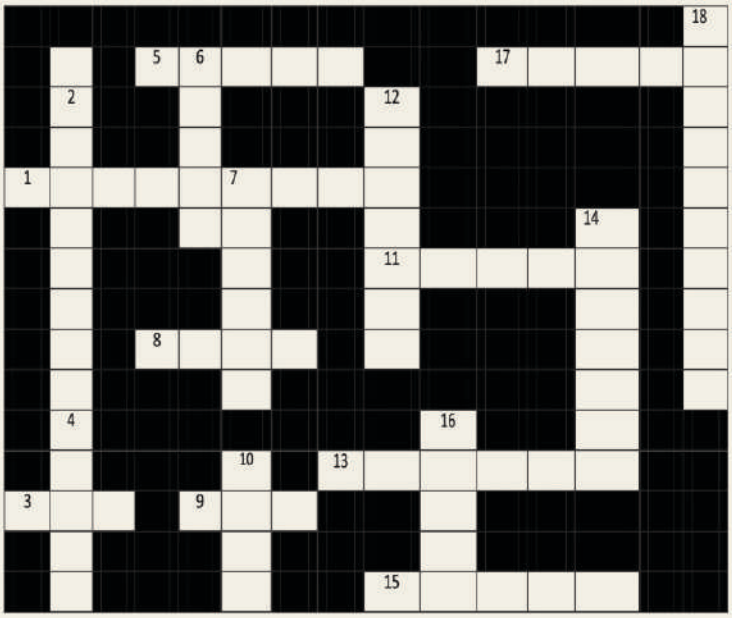

Crosswords No. 21

HORIZONTAL

1. Electric device uses electromagnetic radiation to cook or heat the food
3. Round metal or earthen container used for domestic purpose
5. Used to make round holes or driving fasteners
7. Tool used to expose materials to a hot environment
9. Rotating blades that creates a current of air for cooling or ventilation
11. Blows hot air over damp hair to speed evaporation of water
13. Appliance for extracting juice from fruits and vegetables
15. Large appliance used for frying food
17. Burns fuel to generate heat for cooking food

VERTICAL

2. Device in kitchen used for crushing food
4. Device used to make call over a radiofrequency
6. Bladded tool primarily used in removal of body hair
8. Thin plate with hole used to distribute the load of threaded fasteners
10. Electric device that produces visible light from electric power
12. Used to mix or emulsify food.
14. Cabinet or room for preserving food at very low temperature
16. Used for mixing and grinding food
18. Also known as "idiot box"

क्रॉस वर्ड एवं सुडोकू का
परिणाम अगले अंक में देखें

Sudoku No. 21

					5	1	4	
	7			2			8	
	5	9	1					6
5	8				1	6		
		7				8		
		4	6				7	5
7					4	3	6	
	4			3			1	
	9	3	8					

Answer: Crosswords No. 20

4	9	2	7	8	6	1	3	5
7	3	1	5	9	4	6	2	8
6	5	8	3	1	2	7	4	9
8	6	7	2	5	3	4	9	1
2	3	9	4	7	1	5	8	6
5	4	1	8	6	9	2	7	3
1	2	4	9	3	5	8	6	7
9	8	6	1	4	7	3	5	2
3	7	5	6	2	8	9	1	4

Answer: Soduko No. 20

SHRI RAM MURTI SMARAK TRUST INSTITUTIONS

Bareilly • Lucknow • Unnao

SRMS

TOPNOTCH Recruiters STAMPING

The Industry Readiness of SRMSians Since 1996

Commendable Start of Placement for 2018-22 Batches

- wipro 96
- tcs 41
- Coforge 37
- Nucleus Software 23
- Tech Mahindra 20
- InnoBit 09
- QA InfoTech 09
- upGrad 08
- 08
- REVATURE 06
- jaro education 05
- Justdial 05
- indiamart 04
- nagarro 04
- HCL 04
- ACCOLITE DIGITAL 03
- CapitalVia 03
- Infosys 03
- SYNORIQ 03
- VINOVE 03
- Humble Healthcare Limited 03
- digit 03
- motherson 03
- NSMX 03
- WNS 03
- Birlasoft 02
- CREDABLE 02
- Hindustan Wellness 02
- Ori 02
- Velocity 02
- all technologies 02
- BYJU'S 02
- 02
- exceed 02
- Z 02
- Gyan Vishwas se bhare 01
- daffodil 01
- 01
- planetspark 01
- virtusa 01
- 01
- Allied Market Research 01
- DCM SHRIRAM 01
- epam 01
- hp 01
- 01
- INNOVATION Technology Solutions 01
- Mindtree 01
- PHRONESIS PARTNERS 01
- RACL Geartech Ltd 01

The Show is Still Going On....

Salary Package	Highest	Average	Lowest
	8.00 LPA	3.87 LPA	2.50 LPA

Shri Ram Murti Smarak College of Engg. & Tech., Bareilly (AKTU Code 014)

Shri Ram Murti Smarak College of Engg. Tech. & Research, Bareilly (AKTU Code 450)

Courses Offered : B.Tech. | M.Tech. | B.Pharm | M.Pharm | MBA | MCA

Ram Murti Puram, 13th KM. Bareilly Nainital Highway, Bareilly (U.P.)

Admission Helpline : 7055999555

Follow us: YouTube